

**स्त्री प्रसंग** पुं. (तत्.) मैथुन, संभोग।

**स्त्री प्रिय** वि. (तत्.) 1. जो स्त्री/स्त्रियों को प्रिय हो 2. जिसे स्त्री-स्त्रियाँ प्रिय हों पुं. 1. आम का पेड़ 2. अशोक का पेड़।

**स्त्री-प्रेक्षा** स्त्री. (तत्.) ऐसा खेल-तमाशा जिसमें स्त्रियाँ ही जा सकती हों।

**स्त्री भय** वि. (तत्.) 1. जनाना 2. जनखा।

**स्त्री भोग** पुं. (तत्.) मैथुन।

**स्त्री मंत्र** पुं. (तत्.) ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाह' हो।

**स्त्री रत्न** स्त्री. (तत्.) 1. स्त्रियों में अतिश्रेष्ठ स्त्री, अति उत्तम स्त्री 2. लक्ष्मी।

**स्त्रीराज्य** पुं. (तत्.) ऐसी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जिसमें सब प्रकार के अधिकार और कार्य स्त्रियों के हाथों में ही रहते हों, पुरुषों के हाथों में कुछ भी सत्ता न रहती हो।

**स्त्रीलिंग** पुं. (तत्.) 1. हिंदी व्याकरण में दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है, स्त्री बोधक लिंग 2. स्त्री का चिह्न अर्थात् योनि अथवा भग।

**स्त्रीवश, स्त्रीवश्य** वि. (तत्.) जो स्त्री/पत्नी के वश में हो, पत्नी का वशीभूत, स्त्रीजित।

**स्त्रीवार** पुं. (तत्.) सोम, बुध और शुक्रवार (ज्योतिष में चंद्र, बुध और शुक्र ये तीनों स्त्री-ग्रह माने गए हैं, अतः इनके वार भी स्त्री-वार कहे जाते हैं)।

**स्त्री वास** पुं. (तत्.) ऐसा वस्त्र जो रतिबंध या संभोग के समय के लिए उपयुक्त हो।

**स्त्री विषय** पुं. (तत्.) संभोग, मैथुन।

**स्त्रीव्रण** पुं. (तत्.) योनि, भग।

**स्त्रीव्रत** पुं. (तत्.) अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना, एक स्त्री-परायणता, पत्नी-व्रत।

**स्त्री संग** पुं. (तत्.) संभोग, मैथुन।

**स्त्री-संग्रहण** पुं. (तत्.) किसी स्त्री से बलपूर्वक संभोग आदि करना, व्याभिचार।

**स्त्री-संभोग** पुं. (तत्.) स्त्री प्रसंग, स्त्री सेवन, मैथुन।

**स्त्री-समागम** पुं. (तत्.) दे. स्त्री-संभोग।

**स्त्री-सुख** पुं. (तत्.) 1. स्त्री का सुख, पत्नी का सुख 2. स्त्री/पत्नी से मिलने वाला सुख 3. संभोग, मैथुन।

**स्त्री-सुलभ** वि. (तत्.) नारियों में स्वाभाविक रूप से पाया जाने वाला (गुण), नारी-सुलभ।

**स्त्री सेवन** पुं. (तत्.) स्त्री से संभोग या समागम, मैथुन।

**स्त्री स्वभाव** पुं. (तत्.) 1. नारी-प्रकृति, स्त्री/नारी का स्वभाव 2. स्त्रियों के समान स्वभाव वाला पुरुष।

**स्त्री-हरण** पुं. (तत्.) 1. किसी की पत्नी का अपहरण या चुराना 2. किसी स्त्री को भगा ले जाना।

**स्त्रैण** वि. (तत्.) 1. स्त्री से संबंधित, स्त्री का 2. स्त्रियों की इच्छा या निर्देश या सलाह के अनुसार ही चलने वाला (पुरुष), स्त्री-वशीभूत 3. स्त्रियों के लिए उचित 4. स्त्रियों के समान हाव-भाव, गुण, वेशभूषा आदि से युक्त (पुरुष) पुं. 1. नारी-प्रकृति, स्त्री-स्वभाव 2. स्त्रीत्व वन. स्त्री-केसरों में बदल जाने वाले पुंकेसर।

**स्त्रैणकी स्त्री.** (तत्.) चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा जिसमें स्त्रियों के रोगों (विशेष तौर पर जननेंद्रिय संबंधी रोगों) के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है gynaecology

**स्त्रैणीकरण** पुं. (तत्.) 1. पुरुष को स्त्री के समान सजाना 2. पुरुष द्वारा स्वयं को स्त्री की भाँति सजाना 3. पुरुष के द्वारा स्त्री-सुलभ गुणों का अपनाना।

**स्त्रै राजक** पुं. (तत्.) स्त्री-राज्य का निवासी।

**स्त्र्यध्यक्ष** पुं. (तत्.) अंतःपुर का निरीक्षक।